अध्याय 9

अन्यजाति स्त्रियों की दुविधा

पुस्तक के अंतिम दो अध्यायों में, एज्रा न केवल परमेश्वर की व्यवस्था की शिक्षा को देने वाला, वरन उसे लागू करवाने वाला भी दिखाई देता है, यद्यपि उसके लागू करवाने की विधियाँ बल द्वारा नहीं परन्तु अनुनय करने पर आधारित थीं। ये अध्याय एक ही विषय पर हैं: मूर्तिपूजकों से विवाह करने की समस्या। अध्याय 9 में, एज्रा को समस्या बताई गई, जिसका परिणाम हुआ कि वह शोकित हुआ और उसने अंगीकार और पश्चाताप की सार्वजनिक प्रार्थना की। अध्याय 10 में लोगों ने एज्रा की चिन्ता के प्रत्युत्तर में अपनी परदेशी स्त्रियों को त्याग दिया।

एज्रा द्वारा किए गए सुधार नहेम्याह के सुधारों के साथ किस प्रकार संबंधित हैं? सामान्यतः स्वीकार किए जाने वाले कालानुक्रम के अनुसार, नहेम्याह यहूदा में एज्रा के तेरह वर्ष पश्चात आया था, परन्तु उसे फिर भी अन्यजाति मूर्तिपूजक स्त्रियों की समस्या से जूझना पड़ा था (नहेम्य. 13:23-29)। इस तथ्य की असंगति के कारण अनेकों का यह मानना है कि नहेम्याह एज्रा के आने से पहले यरूशलेम चला गया। परन्तु यह भी संभव है कि एज्रा 9 और 10 में वर्णित किए गए सुधारों को एज्रा ने आरंभ किया, और फिर, लगभग दस वर्ष पश्चात भी, कुछ यहूदी फिर भी उसी पाप के दोषी थे।

अगुवे का विवरण (9:1, 2)

1जब ये काम हो चुके, तब हाकिम मेरे पास आकर कहने लगे, "न तो इस्राएली लोग, न याजक, न लेवीय इस ओर के देशों के लोगों से अलग हुए; वरन् उनके से, अर्थात् कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्रियों और एमोरियों के से घिनौने काम करते हैं। 2क्योंकि उन्होंने उनकी बेटियों में से अपने और अपने बेटों के लिये स्त्रियाँ कर ली हैं; और पवित्र वंश इस ओर के देशों के लोगों में मिल गया है। वरन् हाकिम और सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए हैं।"

लोगों के कुछ अगुवों के द्वारा परमेश्वर के उपासकों और मूर्तिपूजकों के मध्य हुए मिश्रित विवाहों की समस्या को प्रस्तुत किया गया।

आयतें 1, 2. एज्रा द्वारा किए गए सुधारों के विवरण, जिसे प्रथम-व्यक्ति में लिखा गया है,[1] का आरंभ इस संकेत के साथ होता है कि यह एज्रा 7 और 8 में लिखे गए यहूदियों के यरूशलेम में सुरक्षित आगमन के कुछ समय बाद हुआ।

कितना समय बीत गया था **जब ये काम हो चुके** का संकेत इस बात से मिलता है कि यहूदी इस स्थिति के सुधार के लिए "नौवें महीने के बीसवें दिन में" (10:9) एकत्रित हुए। क्योंकि वे "पांचवें महीने के पहिले दिन" (7:9) पहुँचे थे, इसलिए अध्याय 9 की घटनाएँ एज्रा के यरूशलेम पहुँचने के लगभग $4^1/_2$ महीने बाद हुईं। इन सुधारों को लागू होने में और $3^1/_2$ महीने लगे (अगुवों का चुनाव करने के समय सहित; 10:9, 16) और वे "पहिले महीने के पहिले दिन" पूरे हो गए, एज्रा और उसके साथ के लोगों के बाबुल से कूच करने के पूरे एक वर्ष पश्चात (7:9)।

इन $4^1/_2$ महीनों में क्या हुआ? एक मत के अनुसार, नहेम्याह 8 - जो उस सभा का वर्णन है जिसमें एज्रा ने परमेश्वर की व्यवस्था को "सातवें महीने" में (नहेम्य. 7:73) पढ़ा था - को गलत लिखा गया है और इसे एज्रा 8 और 9 के मध्य होना चाहिए।[2] किन्तु यह धारणा अनावश्यक है। यह बहुत संभव है कि अपने आने के बाद से एज्रा समय-समय पर लोगों को व्यवस्था सिखाता रहा और नहेम्याह के आने के पश्चात उसने फिर से व्यवस्था को पढ़ा और समझाया।

एक संभावना है कि एज्रा अर्तक्षत्र की राजाज्ञा की प्रतियां सभी प्रान्तों के अधिकारियों तथा अधिपतियों को दे रहा था (8:36)।[3] एक अन्य संभावना है कि वह यह पता लगाने में समय व्यतीत कर रहा था कि व्यवस्था का पालन किया जा रहा है कि नहीं। परन्तु, अधिक संभावना यही है कि वह वही कर रहा था जिसे करने के लिए वह आया था (7:10)। अगुवों का उससे उनके "विश्वासघात" का विवरण (9:2) एज्रा की गतिविधियों का परिणाम था। यह एच. जी. एम. विलियमसन के तर्क से, कि एज्रा परिस्थिति से पहले से अवगत था और उसके समाधान के लिए उसने प्रस्तावों की रूपरेखा बना रखी थी (देखें 10:3), परन्तु जब तक लोग समस्या का सामना करने और समाधान स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुए तब तक उसने कोई कार्यवाही नहीं की।[4]

अंतिम दो अध्यायों में वर्णन किए गए सुधारों का आरंभ तब हुआ जब **हाकिम** ("अगुवे"; NIV)[5] एज्रा के पास बताने गए कि **न तो इस्राएली लोग, न याजक, न लेवीय इस ओर के देशों के लोगों से अलग हुए,** परन्तु उनके साथ विवाह कर लिए।

यहाँ "देश के लोग" कौन थे? मूलतः, वे गैर-इस्राएली थे, यद्यपि हो सकता है कि कुछ उत्तरी राज्य के उन इस्राएलियों के वंशज हों जिन्होंने राज्य के नाश के पश्चात अन्यजातियों से विवाह कर लिए थे। लेखक ने आठ राष्ट्रों का उल्लेख किया: **कनानियों, हित्तियों, परिज्जियों, यबूसियों, अम्मोनियों, मोआबियों, मिस्रियों और एमोरियों**। यह सूची इस्राएल के कनान को जीत लेने से पहले वहाँ रहने वाले राष्ट्रों की सूची (उत्पत्ति 15:19-21; निर्गमन 3:8, 17; 23:23; 33:2; 34:11; व्यव. 7:1; 20:17; यहोशू 12:8) के समान तो है किन्तु कुछ भिन्न भी है। इन विशिष्ट राष्ट्रों को इस्राएल के सभी पड़ोसियों के प्रतिनिधि के समान देखा जाना चाहिए। उन सब में एक गुण समान था: वे सभी **घिनौने काम** करने के दोषी थे, जो मूर्तिपूजा और उससे संबंधित घृणित प्रथाओं के लिए एक संक्षिप्त अभिव्यक्ति है।

अचरज की बात है कि **हाकिम और सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए हैं।** वे अगुवे थे, परन्तु वे गलत दिशा में अगुवाई कर रहे थे। क्या यह उचित है कि

"हाकिम और सरदार" (या अगुवे) एज्रा को मिश्रित विवाहों की समस्या को बताएँगे, जबकि "हाकिम और सरदार" (या अगुवे) ही "इस विश्वासघात में मुख्य हुए"? हम इन दोनों विचारों का समन्वय यह मानने के द्वारा कर सकते हैं कि उनमें से एक गुट इस बात को लेकर चिन्तित था कि अन्य अगुवे इस पाप के दोषी थे। एक अन्य विकल्प यह मानना है कि सामान्यतः सभी अगुवों को इस बात को लेकर दोष-बोध हुआ कि उनमें से कुछ ने यह पाप किया था और इसलिए, एक प्रकार से, उन्होंने अपने सामूहिक पाप का अंगीकार किया - एज्रा के समान, जिसने अपनी प्रार्थना में समस्त समुदाय के लिए पाप का अंगीकार किया।

यहूदियों द्वारा अपने गैर-यहूदी पड़ोसियों से विवाह करने पर हाकिम और सरदार चिन्तित क्यों थे, और एज्रा तथा (बाद में) नहेम्याह क्यों विचलित हुए? क्या यह परदेशियों के विरुद्ध पक्षपात किसी संकीर्ण विशिष्टता का लक्षण था? यहूदियों ने अपने आप को अन्य लोगों से श्रेष्ठ समझा होगा और इसलिए यह तय किया कि **पवित्र वंश** को सामान्य नश्वर लोगों के साथ मिश्रित नहीं करेंगे। हो सकता है कि यह सत्य हो, परन्तु यहूदी अगुवों द्वारा मिश्रित विवाहों को अस्वीकृत करने में मात्र पक्षपात या श्रेष्ठ होने की मनसा से कहीं अधिक संबंधित था।

एक महत्वपूर्ण सिद्धांत यहाँ सम्मिलित था: अलगाव का सिद्धांत। परमेश्वर ने इस्राएल को एक "पवित्र राष्ट्र" (निर्गमन 19:6) होने के लिए बुलाया था, और पवित्र होने की इस धारणा में परमेश्वर के प्रति समर्पित होने तथा अपने मध्य से जो कुछ पवित्र नहीं है उसे दूर कर देने का विचार सम्मिलित है। इस्राएल को एक विशिष्ट, समर्पित, और पवित्र लोग होने के लिए बुलाया गया था। परमेश्वर ने इस्राएल को जिस अलगाव के लिए बुलाया वह मुख्यतः शारीरिक अलगाव नहीं था। इस्राएली, या यहूदी, सदा ही अन्य लोगों के साथ संपर्क में रहते थे; और अन्य जातियों के लोगों का इस्राएलियों के मत में परिवर्तित होने के द्वारा उनमें सम्मिलित होने का स्वागत रहता था। यह फिर, धार्मिक और आत्मिक अलगाव की बात थी। परमेश्वर के लोगों को अन्य लोगों के साथ ऐसे कभी नहीं जुड़ना था जिससे इस्राएल के विश्वास में समझौता आए।

इस्राएल के अलगाव रखने का उद्देश्य "घिनौने कामों" से बचना था - अपने आप को अपने आस-पास की जातियों के देवी-देवताओं की उपासना में जोड़ने से बचा कर रखना। मूर्तिपूजा के साथ अनैतिक कार्य तथा वर्जित धार्मिक अनुष्ठान भी होते थे। इसलिए हाकिमों और सरदारों का प्रतिरोध "देश के लोगों" के विरुद्ध नहीं था वरन उनके "घिनौने कामों" के विरुद्ध था।

वह प्रथा जो अलगाव के सिद्धांत का, और उसके उद्देश्य की पूर्ति होने का उल्लंघन करती थी वह अन्य जातियों के लोगों के साथ मिश्रित विवाह करना था। यहूदियों के पवित्र इतिहास में स्वधर्मत्याग के अनेकों उदाहरण विद्यमान थे जो "परमेश्वर के लोगों" द्वारा मूर्तिपूजा करने वाले लोगों के साथ सहभागिता रखने और उनसे विवाह करने के कारण हुए थे (देखें उत्पत्ति 6:1-7; गिनती 25:1-5; न्यायियों 2:10-16; 1 राजा. 11:1- 13; नहेम्य. 13:26)।

हाकिम और सरदारों का "पवित्र वंश" (זֶרַע הַקֹּדֶשׁ, *ज़ेरा 'हक्कोदेश*), शब्दार्थ

में, “पवित्र बीज” के विषय चिन्ता परमेश्वर के लोगों की पवित्रता पर केंद्रित थी। वे अब्राहम के “बीज/वंश” थे जो पितरों से आए थे और अन्ततः उनमें होकर “सारी जातियों” को “धन्य” होना था (उत्पत्ति 26:4; KJV)। उनके क्लेश को एक मसीही दृष्टिकोण से समझा जा सकता है, कि यदि यहूदी अन्य जातियों के साथ विवाह करते रहते तो यह संभव है कि यहूदी लोगों की पहचान जाती रहती। सबसे चरम स्थिति में, पृथ्वी पर से प्रभु के प्रति सच्चा विश्वास समाप्त हो जाता, साथ ही आने वाले मसीहा की आशा भी।

उनके विरुद्ध “विश्वासघात” के इस विशिष्ट आरोप का संबंध यहूदियों द्वारा उस नियम का पालन नहीं करना था जो परदेशियों के साथ विवाह वर्जित करता था (निर्गमन 34:11-17; व्यव. 7:1-6)। परमेश्वर ने यह नियम इसलिए दिया था क्योंकि वह जानता था कि ऐसे विवाहों के कारण इस्राएली उसमें अपने विश्वास को छोड़ देंगे और अन्य देवी-देवताओं की उपासना करने लगेंगे। व्यवस्थाविवरण 7:3, 4 यहूदियों को आज्ञा देता था कि देश के लोगों के साथ “ब्याह शादी न करना” क्योंकि इससे वे “दूसरे देवताओं की उपासना” की ओर चले जाएँगे। इस्राएली सदा ही अन्यजातियों को परिवर्तित यहूदी बन जाने की स्वीकृति प्रदान करते थे, परन्तु एज्रा के दिनों में पुरुष ऐसी स्त्रियों से विवाह कर रहे थे जो परिवर्तित नहीं हुई थीं। ये अन्यजाति-मूर्तिपूजक स्त्रियाँ अन्य देवताओं की उपासना करना जारी रखे हुई थीं और अपने पति तथा बच्चों पर भी ऐसा ही करने का प्रभाव डाल सकती थीं।

किसी परदेशी विवाह संबंधी के प्रभाव से समन्वयता भी आ सकती थी। ऐसा होने से यहूदियों की उपासना भ्रष्ट हो जाती जब वे अन्यजातियों की विधियों से प्रभु की उपासना करने के प्रयास करते। यह भी संभव है कि ये यहूदी, परदेशी स्त्रियों से विवाह के द्वारा, एक अन्य पाप के भी दोषी थे - उनसे विवाह करने के लिए अपनी यहूदी पत्नियों को त्याग देने के। यह वह पाप था जिसके विषय मलाकी ने, जिसने लगभग उसे समय भविष्यवाणी की थी, उनपर दोषारोपण किया था (मलाकी 2:10-16)।

एज्रा की प्रतिक्रिया (9:3, 4)

3यह बात सुनकर मैं ने अपने वस्त्र और बागे को फाड़ा, और अपने सिर और दाढ़ी के बाल नोचे, और विस्मित होकर बैठा रहा। 4तब जितने लोग इस्राएल के परमेश्वर के वचन सुनकर बँधुआई से आए हुए लोगों के विश्वासघात के कारण थरथराते थे, सब मेरे पास इकट्ठे हुए, और मैं साँझ की भेंट के समय तक विस्मित होकर बैठा रहा।

आयत 3. एज्रा ने अपनी तीव्र भावनाओं को अपना **वस्त्र** और अपना **बागा** फाड़ने, अपने **सिर** और **दाढ़ी** से **बाल** नोचने और विस्मित होकर शान्त बैठने के द्वारा व्यक्त किया। अपने कपड़े फाड़ना और अपने बाल नोचना दुःख और शोक

व्यक्त करने की पारंपरिक विधियाँ थीं। एज्रा के लिए ये प्रतिक्रियाएं उपयुक्त थीं क्योंकि वह यहूदा के लिए शोकित और दुखी थी। उसने अपने आप को कष्ट में दिखाया क्योंकि जो यहूदी मूर्तिपूजा के कारण बंधुवाई में चले गए थे वे अपने पुराने मार्गों की ओर लौट रहे थे। वे अन्य देवताओं की उपासना करने के लिए प्रभु परमेश्वर को त्याग देने के मार्ग पर थे! विनाश से बचाए जाने के बाद, वे फिर से वही पाप कर रहे थे जिन से उनपर विनाश आया था! परदेशियों की "बेटियों" से विवाह करना (9:2) उनके देवताओं को स्वीकार करना था। इसलिए कोई अचरज की बात नहीं कि एज्रा इतना अशांत हुआ!

आयत 4. एज्रा के साथ और भी सम्मिलित हुए। **जितने लोग इस्राएल के परमेश्वर के वचन सुनकर बँधुआई से आए हुए लोगों के विश्‍वासघात के कारण थरथराते थे, सब मेरे पास इकट्ठे हुए।** यह विवरण यहूदी समुदाय के अन्दर के एक गुट के लिए हो सकता है, जो व्यवस्था का कड़ाई से पालन करने के पक्ष में थे। उन्होंने जाना (या हाल ही में उन्हें बोध हुआ) कि परमेश्वर की व्यवस्था मूर्तिपूजकों के साथ विवाह करने के विषय जो सिखाती थी, और परमेश्वर की व्यवस्था के उल्लंघन के क्या दण्ड थे। उन्होंने समझ लिया कि जिन्होंने अन्यजाति-मूर्तिपूजकों से विवाह किया था उनके "विश्वासघात" के कारण सारा राष्ट्र परमेश्वर द्वारा दण्ड दिए जाने या त्यागे जाने के जोखिम में था। संभवतः, वे एज्रा की भावनाओं से सहमत थे और शोक के साथ खड़े हुए उसके बोलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उस शोक करने वाले याजक के चारों ओर एक भीड़ एकत्रित हो गई। एज्रा सारे दिन विस्मित होकर बैठा रहा, जब तक कि सांझ की भेंट का समय नहीं हो गया। यह संध्या के 3 बजे के लगभग होगा, ऐसा समय जिसे "प्रार्थना का समय" जाना जाता था (प्रेरितों 3:1)।

दोष-स्वीकृति के लिए एज्रा की प्रार्थना (9:5-15)

5परन्तु साँझ की भेंट के समय मैं वस्त्र और बागा फाड़े हुए उपवास की दशा में उठा, फिर घुटनों के बल झुका, और अपने हाथ अपने परमेश्‍वर यहोवा की ओर फैलाकर कहा: 6"हे मेरे परमेश्‍वर! मुझे तेरी ओर अपना मुँह उठाते लाज आती है, और हे मेरे परमेश्‍वर! मेरा मुँह काला है; क्योंकि हम लोगों के अधर्म के काम हमारे सिर पर बढ़ गए हैं, और हमारा दोष बढ़ते बढ़ते आकाश तक पहुँचा है। 7अपने पुरखाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक हम बड़े दोषी हैं, और अपने अधर्म के कामों के कारण हम अपने राजाओं और याजकों समेत देश देश के राजाओं के हाथ में किए गए कि तलवार, दासत्व, लूटे जाने, और मुँह काला हो जाने की विपत्तियों में पड़ें, जैसे कि आज हमारी दशा है। 8पर अब थोड़े दिन से हमारे परमेश्‍वर यहोवा का अनुग्रह हम पर हुआ है, कि हम में से कोई कोई बच निकले, और हम को उसके पवित्रस्थान में एक खूँटी मिले, और हमारा परमेश्‍वर हमारी आँखों में ज्योति आने दे, और दासत्व में हम को कुछ विश्रान्ति मिले। 9हम दास तो हैं ही, परन्तु हमारे दासत्व में हमारे परमेश्‍वर ने हम को नहीं छोड़ दिया, वरन् फारस के राजाओं को

हम पर ऐसे कृपालु किया कि हम नया जीवन पाकर अपने परमेश्वर के भवन को उठाने, और इसके खण्डहरों को सुधारने पाए, और हमें यहूदा और यरूशलेम में आड़ मिली। [10]अब हे हमारे परमेश्वर, इसके बाद हम क्या कहें, यही कि हम ने तेरी उन आज्ञाओं को तोड़ दिया है, [11]जो तू ने यह कहकर अपने दास नबियों के द्वारा दीं, 'जिस देश के अधिकारी होने को तुम जाने पर हो, वह तो देश देश के लोगों की अशुद्धता के कारण और उनके घिनौने कामों के कारण अशुद्ध देश है, उन्होंने उसे एक सीमा से दूसरी सीमा तक अपनी अशुद्धता से भर दिया है। [12]इसलिये अब तू न तो अपनी बेटियाँ उनके बेटों को ब्याह देना और न उनकी बेटियों से अपने बेटों का विवाह करना, और न कभी उनका कुशल क्षेम चाहना, इसलिये कि तुम बलवान बनो और उस देश के अच्छे अच्छे पदार्थ खाने पाओ, और उसे ऐसा छोड़ जाओ, कि वह तुम्हारे वंश के अधिकार में सदैव बना रहे।' [13]उस सब के बाद जो हमारे बुरे कामों और बड़े दोष के कारण हम पर बीता है, जबकि हे हमारे परमेश्वर, तू ने हमारे अधर्म के बराबर हमें दण्ड नहीं दिया, वरन् हम में से कितनों को बचा रखा है, [14]तो क्या हम तेरी आज्ञाओं का फिर से उल्लंघन करके इन घिनौने काम करनेवाले लोगों से समधियाना का सम्बन्ध करें? क्या तू हम पर यहाँ तक कोप न करेगा जिस से हम मिट जाएँ और न तो कोई बचे और न कोई रह जाए? [15]हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! तू धर्मी है, हम बचकर मुक्त हुए हैं जैसे कि आज वर्तमान है। देख, हम तेरे सामने दोषी हैं, इस कारण कोई तेरे सामने खड़ा नहीं रह सकता।"

एज्रा ने जब बोलना आरंभ किया तो वह न तो अपने श्रोताओं को डांटने के लिए था, और न ही उन्हें और निर्देश देने के लिए। वरन, वह प्रार्थना में परमेश्वर से बात करने के लिए था।

आयत 5. साँझ की भेंट के समय एज्रा **उपवास की** [अपनी] **दशा में उठा।** "उपवास" (תַּעֲנִית, *था*[अ]*निथ*) केवल यहीं एक बार पुराने नियम में आया है। यह क्रिया עָנָה (*'अनाह*) से संबंधित है, जिसका अर्थ होता है "व्यथित होना" या "अपने आप को दीन करना।" यह शब्द कभी-कभी उपवास के लिए भी प्रयोग किया जाता है (भजन 35:13; यशा. 58:3, 5; देखें लैव्य. 16:29, 31; 23:27, 32)। इस संदर्भ में NRSV "दीन होने" के स्थान पर कहती है "मैं अपने उपवास से उठा।" क्योंकि एज्रा की प्रार्थना उसी दिन हुई जिस दिन उसने मिश्रित विवाहों का समाचार सुना, इसलिए यह नहीं लगता है कि उसने बहुत लंबा उपवास रखा होगा। इसलिए अनुवाद "दीन होना" संदर्भ के साथ अधिक सटीक बैठता है।

खड़े होने के बाद, एज्रा नाटकीय ढंग से **घुटनों के बल झुका**, और अपने **हाथ** स्वर्ग की ओर उठाए और अपनी प्रार्थना आरंभ की। उसकी इस कार्यवाही ने अवश्य ही यहूदियों का ध्यान उसकी ओर खींचा होगा, और वे उसकी प्रार्थना के सन्देश को गंभीरता से लेने लगे। एज्रा का उद्देश्य था कि उसकी प्रार्थना से अन्य लोग प्रेरित हों कि वे उस ईश्वरीय शोक का अनुभव करें जिसका अनुभव वह यहूदियों के पापों के कारण कर रहा था। फिर भी, इसका यह अभिप्राय नहीं है कि एज्रा का

शोक वास्तविक नहीं था। निश्चय ही उसकी कार्यवाही और शोक केवल बाहरी दिखावे के लिए नहीं थे। वह वास्तव में शोकित हुआ था।

आयतें 6, 7. *लोगों के पापों का सामान्य अंगीकार।* एज्रा ने अपनी प्रार्थना का आरंभ पाप की दोष-स्वीकृति के साथ किया। उसने उस बात को स्वीकार किया, जिसे इस्राएल के इतिहास से परिचित प्रत्येक जन पहले से ही जानता था: यहूदी परमेश्वर के विरुद्ध निरन्तर पाप करते आए थे। वह व्यक्तिगत रीति से **लाज और मुँह काला** होना अनुभव कर रहा था, अपने राष्ट्र के **अधर्म के कामों** के लिए; उसने कहा कि **हमारा दोष बढ़ते बढ़ते आकाश तक पहुँचा है**। एज्रा ने स्वीकार किया कि वे (अपने) **पुरखाओं के दिनों से लेकर आज के दिन तक** बड़े दोषी थे। उनका वर्तमान पाप, उनके पाप करते रहने के इतिहास के साथ सुसंगत था। उनके **बड़े दोषी** - और विशेषकर उनके **राजाओं** और **याजकों** के दोष के कारण - वे देश देश के हाथों में किए गए कि **मुँह काला** किए जाएं और **लूटे जाने**, और **दासत्व** में ले जाए जाएँ।

आयतें 8, 9. *परमेश्वर की आशीषों के लिए उसकी कृतज्ञता।* एज्रा ने अपनी प्रार्थना जारी रखते हुए स्तुति और कृतज्ञता व्यक्त की, लोगों के पाप के होते हुए भी उनके लिए परमेश्वर द्वारा हाल ही में किए गए कार्यों के लिए। राल्फ डब्ल्यू. क्लेइन ने कहा कि एज्रा की प्रार्थना के दूसरे भाग में, जिसका आरंभ **पर अब** के साथ होता है, "अचरज के साथ अंगीकार है यहोवा की भलाइयों के लिए, पापों के लंबे इतिहास के होते हुए और होने के बाद भी। अनुग्रह का हाल ही का समय, केवल लगभग अस्सी वर्ष, बहुत संक्षिप्त है, सदियों के मेसोपोटामिया के हमले और अत्याचारों की तुलना में।"[6]

प्रभु ने **थोड़े दिन से** उनपर **अनुग्रह** किया था कि उनमें से **कोई कोई** बच निकले, और उनको (परमेश्वर के) **पवित्रस्थान में एक खूँटी मिले**। यह "खूंटी" (יָתֵד, *यथेद*) किसी तम्बू की खूंटी के लिए हो सकता था जिसे धरती में ठोका जाता है जिससे तम्बू दृढ़ और सुरक्षित हो जाए या दीवार में ठोकी गई कील हो सकती थी। विचार यही है कि परमेश्वर ने लोगों को उनके देश में सुरक्षित किया था उनके मंदिर के साथ।

एज्रा ने प्रार्थना की, कि परमेश्वर उनकी **आँखों में ज्योति आने दे**। इस निवेदन का अनुवाद "हमारी आँखों को ज्योतिर्मय कर" भी किया जा सकता है (देखें NRSV; NAB)। इस अभिव्यक्ति का अर्थ NJB ने प्रगट किया है, "परमेश्वर हमारी आत्माओं को उभार सकता है" कहने के द्वारा। उसने यह भी माँगा कि परमेश्वर से **दासत्व में हम को कुछ विश्रान्ति मिले**। कुछ अर्थों में, वे पहले भी थे - और अब भी **दास** थे। वे अपने फारसी स्वामियों के आधीन थे। यद्यपि वे आधीन लोग थे, किन्तु **परमेश्वर ने हम को नहीं छोड़ दिया** था। परन्तु, **कृपालु** होकर, **फारस के राजाओं** को उनके **नया जीवन पाकर** उन यहूदियों को अपने **परमेश्वर के भवन** को फिर से बनाने, और उन यहूदियों को **यहूदा और यरूशलेम में आड़** देने के लिए उभारा था।

प्रत्यक्षतः एज्रा परमेश्वर द्वारा इस्राएल को हाल ही में दी गई आशीषों की बात कर रहा था। उसने फारस के राजाओं को उभारा था कि वे यहूदियों को बाबुल से लौट जाने दें कि अपने स्वदेश में जाकर मंदिर का पुनः निर्माण करें।

यहूदियों को “आड़” देने से क्या तात्पर्य है यह कम स्पष्ट है। नहेम्याह द्वारा यरूशलेम की दीवारों को बनाना अभी भविष्य में था (यद्यपि “दीवार” का हवाला देकर यह दावा किया गया है कि नहेम्याह एज्रा से पहले यरूशलेम गया था)। संभवतः आयत 9 में शब्द “आड़” रूपक अलंकार है “संरक्षण” के लिए। परमेश्वर ने फारस के राजाओं को अपने लोगों के चारों ओर एक संरक्षण की “आड़” उपलब्ध करवाने के लिए प्रयोग किया था। विलियमसन ने “दो विचार” उद्धृत किए जो यह दिखाते हैं कि यहाँ पर “आड़” को अलंकार के समान प्रयोग किया गया है: (1) यदि उद्धरण केवल शहर की दीवार ही के लिए होता, तो वह इस वाक्यांश “यहूदा और यरूशलेम में” असंगत लगता। (2) जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद “आड़” (גָּדֵר, *गदेर*) हुआ है वह सामान्यतः किसी दाख की बारी या मार्ग के किनारे की बाड़ के लिए प्रयोग होता है, न कि शहर की दीवार के लिए।[7] परिणामस्वरूप, “आड़” के लिए यह उद्धरण इस विचार को सहायता प्रदान नहीं करता है कि नहेम्याह का यरूशलेम में कार्य एज्रा से पहले का था।

आयतें 10-14. *एक विशिष्ट पाप का अंगीकार।* एज्रा ने उसी पाप का अंगीकार किया जो यहूदियों ने किया था, **परमेश्वर** द्वारा उन पर दिखाई गई महान दया के बाद भी। वह जानता था कि लोगों के पास कोई बहाना नहीं है। उसने प्रार्थना की **“इसके बाद हम क्या कहें … ?”** लोगों ने परमेश्वर की **आज्ञाओं को तोड़ दिया** था (9:10), क्योंकि उसने उन्हें **नबियों** के द्वारा चेतावनी दी थी कि वे **देश के अधिकारी होने को** हैं वह **अशुद्ध देश है** (9:11)। इस कारण से उसने उन्हें कहा था कि **न तो अपनी बेटियाँ उनके बेटों को ब्याह देना और न उनकी बेटियों से अपने बेटों का विवाह करना** (9:12)। परमेश्वर ने उन्हें सीधे से यह आज्ञा दी थी कि कनान के लोगों के साथ विवाह न करें। उन्हें कनान के लोगों का कभी **कुशल क्षेम** भी नहीं चाहना था, जिससे कि वे **देश** के अच्छे पदार्थ खाने पाएँ और **वह तुम्हारे वंश के अधिकार में सदैव बना रहे**।

एज्रा निःसंदेह पेंटाट्यूक में पाए जाने वाले नियमों को उद्धृत कर रहा था, परन्तु उद्धरण में कई खण्डों के भागों को सम्मिलित करता है (देखें व्यव. 7:1; 11:8; 23:6; 2 राजा. 21:16; यशा. 1:19; यहेज. 37:25)। उसने विशेषकर व्यवस्थाविवरण को उद्धृत किया, जिसमें यहूदियों को कनान के लोगों से विवाह करने को मना किया गया था और यदि वे ऐसा करते तो उसके परिणामों के प्रति सचेत किया था (व्यव. 7:3, 4)। एज्रा की दृष्टि में, वे नियम, यद्यपि सदियों पहले दिए गए थे, परन्तु तब भी लागू थे। उनके लिए कहा गया कि वे “नबियों” द्वारा दिए गए, संभवतः इसलिए क्योंकि मूसा को एक नबी माना गया है (व्यव. 18:15), और उसके बाद से नबियों ने मूसा की आज्ञाओं को दोहराया था। नबियों की वाणी को परमेश्वर की वाणी के तुल्य समझा जाता था।

परमेश्वर के अनुग्रह, उसके स्पष्ट निर्देशों, और इस तथ्य के कि उसने उनके पापों के लिए उन्हें दंड दिए थे, के होने पर भी वे अनाज्ञाकारी हुए। बंधुवाई का उल्लेख करते हुए, एज्रा ने स्वीकार किया कि यहूदा का दण्ड उनके **अधर्म के बराबर** नहीं था (9:13)। जो बंधुवाई से आए थे उन्होंने फिर से **इन घिनौने काम करनेवाले**

लोगों से समधियाना का सम्बन्ध करने के द्वारा परमेश्वर के नियम का उल्लंघन कर लिया था (9:14)।

यद्यपि एज्रा ने तथ्य को प्रश्न के रूप में रखा (**"तो क्या हम तेरी आज्ञाओं का फिर से उल्लंघन करके ...?"**), इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह एक तथ्य था। उसने जो इसके बाद पूछा वह भी अलंकारयुक्त था, जो संकेत था कि वह निश्चित सत्य है। **"क्या तू हम पर यहाँ तक कोप न करेगा जिस से हम मिट जाएँ ...?"** का अर्थ है, यहूदा के मूर्तिपूजकों के साथ मिश्रित विवाहों के कारण, परमेश्वर उनसे इतना क्रोधित हो सकता था कि लोगों को ऐसा नाश कर कि **न तो कोई बचे और न कोई रह जाए** (9:14)।

दूसरे शब्दों में, एज्रा ने स्वीकार किया कि, परमेश्वर द्वारा उनके लिए इतना कुछ किए जाने के बाद भी, यहूदियों ने परमेश्वर की आज्ञाओं के उल्लंघन करने और देश के लोगों के साथ विवाह करने के द्वारा पाप किया था। वे नाश किए जाने के लायक थे। मार्क ए. थौर्णट्विट ने कहा कि एज्रा ने "समुदाय के सामने दो अलंकारयुक्त प्रश्न रखे, समुदाय के द्वारा परमेश्वर की आज्ञाओं के निरन्तर उल्लंघन के परिणामों को गंभीरता से उनके समक्ष प्रकट करने हेतु।"[8]

आयत 15. *उसका परमेश्वर की धार्मिकता को स्वीकार करना।* एज्रा ने अपनी प्रार्थना का अन्त परमेश्वर की धार्मिकता और यहूदा की अयोग्यता की पुष्टि करने के साथ किया। उसने **इस्राएल के परमेश्वर यहोवा** के **धर्मी** होने को पहचाना, सम्पूर्णतः पवित्र और न्यायी, उसके लोगों की तुलना में, जो कि दोषी थी और इस कारण अपने पापों में प्रभु के सामने **खड़ा नहीं रह सकते** थे। एज्रा ने स्वीकार किया कि वह और उसके लोग क्षमा के योग्य नहीं थे। लोगों की ओर से, एज्रा धर्मी परमेश्वर की दया ही की आशा रख सकता था।

इस प्रार्थना का एक चकित करने वाला गुण है कि एज्रा ने वास्तव में क्षमायाचना नहीं की। प्रार्थना में क्षमा के लिए विनती निहित है, परन्तु इसे उनके द्वारा की गई गलती को सुधारने के प्रति पहला कदम देखा जाना चाहिए। इससे पहले कि और कुछ किया जा सके, लोगों को परमेश्वर को यह दिखाना था कि उन्हें अपनी गलती का बोध था। एज्रा की अंगीकार की प्रार्थना से यह स्पष्ट था। अध्याय 10 बताता है कि उन्होंने अपने पाप से पश्चाताप करने के लिए उचित कदम उठाना कैसे आरंभ किया।

अनुप्रयोग

विश्वासियों में ही विवाह करना (अध्याय 9; 10)

एज्रा 9 और 10 में हम एज्रा को कार्य करते हुए देखते हैं। उसका कार्य परमेश्वर की व्यवस्था (जैसी मूसा की व्यवस्था में पाई जाती है) को सिखाना, और उसे लागू भी करवाना (7:10, 25, 26) दोनों ही थे। इन दो अध्यायों में हम उसे इसे लागू करवाते हुए देखते हैं। अध्याय 9 के आरंभ में, इस वाक्यांश "जब ये काम हो चुके" (9:1), के अतिरिक्त अन्य कोई समय के सूचक नहीं दिए गए हैं। एज्रा 10:9 से यह

संकेत अवश्य मिलता है कि यहूदा और बिन्यामीन के सभी पुरुष, उनके पापों के विषय, एज्रा की बात को सुनने के लिए, नौवें महीने के सत्रहवें दिन एकत्रित हुए थे। यह एज्रा के आगमन के 4½ महीने पश्चात था।

वह पाप क्या था? परमेश्वर के लोगों ने अपने लिए देश के लोगों में से स्त्रियों को लेकर उनसे विवाह कर लिया था (9:1, 2)।

जब एज्रा ने यह सुना, तो वह विस्मित हुआ और उसने अपनी लज्जा और अपना मुँह काला होने को अपने कपड़े फाड़ने और अपने सिर तथा दाढ़ी से कुछ बाल नोचने के द्वारा प्रगट किया। वह "साँझ की भेंट के समय तक विस्मित होकर बैठा रहा" और फिर उसने प्रार्थना की जिसमें उसने इस्राएल के पाप को स्वीकार किया (9:3-15)। वह इतना चिन्तित क्यों था? इसमें क्या पाप सम्मिलित था? परदेशियों के साथ मिश्रित विवाह करना व्यवस्था द्वारा वर्जित था (निर्गमन 34:11-17; व्यव. 7:1-6)। परमेश्वर के लोगों ने व्यवस्था का उल्लंघन किया था!

परमेश्वर ने मिश्रित विवाहों को वर्जित क्यों किया था? एज्रा (और बाद में नहेम्याह भी, नहेम्य. 13:23-29 में) इसके विषय इतने चिन्तित क्यों थे? कारण देश के लोगों से मिश्रित विवाह प्रतिबंधित करने वाले खण्डों में दिया गया है: गैर-इस्राएली के साथ विवाह करने का अर्थ था मूर्तिपूजक के साथ वाचा में बंध जाना और मूर्तिपूजा में ले जाए जाने के जोखिम में आ जाना। व्यवस्थाविवरण 7:3, 4 में लिखा है:

> "और न उन से ब्याह शादी करना, न तो उनकी बेटी को अपने बेटे के लिये ब्याह लेना। क्योंकि वे तेरे बेटे को मेरे पीछे चलने से बहकाएंगी, और दूसरे देवताओं की उपासना करवाएंगी; और इस कारण यहोवा का कोप तुम पर भड़क उठेगा, और वह तेरा शीघ्र सत्यानाश कर डालेगा।"

यही समस्या इस्राएल के इतिहास में हुई थी: इस्राएल का इस विषय में व्यवस्था के पालन में असफल रहना, परमेश्वर के लोगों के लिए विनाशकारी रहा था।[9]

एज्रा की चिन्ता का आधार परमेश्वर के वचन के प्रति उसकी धुन तथा परमेश्वर के लोगों के प्रति उसका प्रेम था। यहूदी सत्तर वर्ष की बंधुवाई से लौट कर आए थे - जो ऐसा दण्ड था जिसका आंशिक कारण यह तथ्य था कि उन्होंने देश के लोगों में विवाह किए थे और मूर्तिपूजक हो गए थे। अब, परमेश्वर के अनुग्रह से, कुछ बचे हुए लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश में लौट आए थे। अब वे क्या कर रहे थे? वे उसी पाप में फिर से पड़ रहे थे जिस के कारण सौ से भी अधिक वर्ष पूर्व परमेश्वर ने उनका नाश किया था! एज्रा लोगों से प्रेम करता था और यह सुनिश्चित करना चाहता था कि वे व्यवस्था का पालन करें जिससे इतिहास दोहराया न जाए। उसने इस पाप को बहिष्कृत कर देने के लिए कड़े कदम उठाए जिससे यह और आगे न फैलने पाए। (बाद में नहेम्याह ने भी ऐसा ही किया।)

इस्राएल में मिश्रित विवाहों के लिए परमेश्वर का प्रतिरोध एक धार्मिक मामला था। उसका प्राथमिक उद्देश्य इस्राएल के वंश को विशुद्ध रखना था; वह वंश कभी भी "विशुद्ध" तो नहीं था। गैर-इस्राएलियों के लिए इस्राएल में सम्मिलित

हो जाना सदा ही संभव रहा था।[10] उदाहरण के लिए, प्रभु यीशु की वंशावली में तीन गैर-इस्राएली स्त्रियों के नाम हैं: तमार, रहाब, और रूत (मत्ती 1:3, 5)।

एज्रा के दिनों में भी, गैर-यहूदी, यहूदी बन सकते थे। इसलिए जो हुआ था वह संभवतः यह था कि लौटने वालों में से अनेकों ने अन्यजातियों में विवाह कर लिए थे, परन्तु कई अन्यजातियों ने (विशेषकर अन्यजाति स्त्रियों ने) यहूदी मत में परिवर्तित होने और एकमात्र सच्चे परमेश्वर की उपासना करने से इनकार कर दिया। वे अन्यजाति-मूर्तिपूजक ही बने रहे जिससे यहूदी समुदाय को ख़तरा हुआ। यह संभव था कि वे अपने पतियों को प्रभु परमेश्वर से पृथक ले जाते। इसका परिणाम इस्राएल के विश्वास के लिए घातक होता। इसलिए, एज्रा और नहेम्याह, परमेश्वर के लोगों के वंश के विषय नहीं, वरन उनके विश्वास के प्रति चिन्तित थे।

समस्या और भी विकट इसलिए थी क्योंकि वे यहूदी अगुवे थे जो इन परदेशी स्त्रियों से विवाह करने के दोषी थे।[11] इससे यही संभावना थी कि शेष मण्डली भी उनका अनुसरण करेगी। इसलिए यहूदा में समस्या थी, जिसको तुरंत निकाल देना अनिवार्य था।

निवारण क्या था? यहूदियों के अगुवों ने समस्या का समाधान सुझाया। उनका सुझाव था कि जिन्होंने अविश्वासियों से विवाह किए हैं वे अपनी अविश्वासी पत्नियों को त्याग दें, उन स्त्रियों के बच्चों सहित (10:2, 3)। इससे आगे कुछ महीनों में यही किया गया। अध्याय 10 में उनकी सूची सम्मिलित है जिन्होंने परदेशी स्त्रियों से विवाह किए थे और उन्हें त्याग दिया था (10:18-44)।

यह एक अति कठोर कदम प्रतीत होता है। हम सोच सकते हैं, "वे बेचारी स्त्रियाँ! वे कैसे जीवन-यापन करतीं?" हमें विशेषकर अचरज में डालने वाली बात बच्चों को भी त्याग देना है। बच्चे क्यों? उन्होंने तो कुछ गलत नहीं किया था? पिताओं के बिना, उनकी देखभाल कौन करता? हम इन प्रश्नों और प्रतिरोधों का क्या उत्तर दे सकते हैं?

हम यह विश्वास करना चाहेंगे कि जब इन पत्नियों और बच्चों को त्याग कर भेज दिया गया, तो उनके भूतपूर्व पतियों तथा पिताओं ने उनके लिए कुछ प्रावधान किया होगा। संभव है कि उनके कुछ निकट (गैर-यहूदी) संबंधी आस-पास के क्षेत्र में रहते होंगे जिससे उनके चले जाने से उन्हें भूखों या खुले में रहने के कारण मरने की स्थित न आए। यह भी संभव है कि परमेश्वर ने उन्हें इतना भ्रष्ट - और ऐसा भ्रष्ट कर देने वाला समझा - कि उसने उनके चले जाने के पश्चात उनकी भलाई के विषय यहूदियों को चिंता नहीं करने देना चाहा। हम जो निश्चित जानते हैं वह जो किया गया वही है। कार्यविधि चर्म सीमा की थी, किन्तु प्रभावी थी। एज्रा के, और बाद में नहेम्याह के प्रयासों के द्वारा यहूदी वापस मूर्तिपूजा में पड़ने से बच गए।

हम क्या शिक्षा ले सकते हैं? एज्रा में पाए जाने वाले इस पाप और उसके समाधान से हम क्या शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं? पहले, हम दो स्थितियाँ देखेंगे जिनमें इस खण्ड का उपयोग नहीं किया जाना चाहिए, और फिर वह एक स्थित जिसमें इसका उपयोग किया जाना चाहिए।

1. इस खण्ड का उपयोग विभिन्न जातियों में विवाह करने पर लागू नहीं

किया जाना चाहिए। न ही यहाँ पर, और न ही बाइबल में किसी अन्य स्थान पर, परमेश्वर ने अन्तर-जातीय विवाह को वर्जित किया है। वह अपने लोगों के विश्वास के विषय चिन्तित है, उनकी खाल के रंग के विषय में नहीं।

2. इसके अतिरिक्त, यह खण्ड उन विवाहों के विषय नहीं है जो तलाक हो जाने के पश्चात की गई हैं। हो सकता है कि कुछ यहूदी पुरुषों ने परदेशी स्त्रियों से विवाह करने के लिए अपनी यहूदी पत्नियों को तलाक दे दिया हो (जैसा कि मलाकी 2:10-16 में प्रतीत होता है), परन्तु एज्रा की पुस्तक विवाह, तलाक, और पुनर्विवाह की समस्या पर केंद्रित नहीं है।

एज्रा के जीवनकाल में एक भिन्न सिद्धान्त कार्यकारी था। परमेश्वर विश्वासी लोगों को सुरक्षित रख रहा था, जिनमें से होकर मसीहा को आना था। इसलिए यह कठोर कदम उठाया गया: परमेश्वर के लोगों में से अविश्वासियों को निकाल दिया गया।

एज्रा मिश्रित-धर्म विवाहों के प्रति चिन्तित था। यह कहना उचित होगा कि, एज्रा की पुस्तक एक ऐसे सिद्धान्त को दिखाती है जो आज भी लागू है - यह कि, परमेश्वर के लोगों को विश्वासियों ही से विवाह करना चाहिए जिससे उनके मन परमेश्वर से पलट न जाएँ। बहुत से मसीहियों ने विश्वास के बाहर विवाह किए हैं, और परिणामस्वरूप, वे परमेश्वर के प्रति अविश्वासी हो गए हैं। वे यदि विश्वासी रहे भी, तो भी मसीह की सेवकाई में उन्होंने गतिरोधों का सामना किया है: उन्हें नियमित रूप से आराधना सभाओं में आने, उदारता से देने, या अपने घरों अथवा योग्यताओं को परमेश्वर की सेवा के लिए लगाने में कठिनाई होती है। उन्हें बच्चों को "प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उन का पालन-पोषण" (इफि. 6:4) करने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई मसीहियों के लिए यह भी श्रेय देने योग्य बात है कि वे अपने अविश्वासी जीवन-साथियों को मसीह के लिए जीत सके हैं। परन्तु अन्यों ने ऐसा करना तो चाहा किन्तु सफल नहीं हो सके।

परन्तु फिर भी हमें यह मानना होगा कि इस विषय पर नए नियम की शिक्षा प्रत्यक्षतः उतनी निषेधात्मक नहीं है जितनी मूसा की व्यवस्था है, जिसमें अविश्वासियों से विवाह करना स्पष्ट वर्जित है। यद्यपि पौलुस ने लिखा कि हमें "अविश्वासियों के साथ असमान जुए में नहीं जुतना है" (2 कुरि. 6:14), उसने (तथा औरों ने) यह भी स्पष्ट किया कि मसीही के लिए अविश्वासी के साथ विवाह में बने रहना पाप नहीं है। उसने यह स्पष्ट किया कि अविश्वास मसीही के लिए "अविश्वासी" को तलाक देने का वैध कारण नहीं है (1 कुरि. 7:12-14; देखें 1 पतरस 3:1, 2)। यह निर्देश एज्रा द्वारा दिए गए अनिवार्य निर्देश कि यहूदियों को अपनी "[परदेशी] स्त्रियों को निकालना था" (10:19) की तुलना में विरोधी है।

नए नियम की शिक्षाएँ हमें चार निष्कर्षों पर लाती हैं:

1. किसी मसीही के लिए गैर-मसीही से विवाह करना अच्छा नहीं है, उसी कारण से जिसके द्वारा यहूदियों के लिए अविश्वासियों के साथ विवाह करना पाप था - क्योंकि ऐसा संभव है कि अविश्वासी मसीही के प्रभु से दूर हो जाने का कारण हो जाएगा।

2. एक मसीही किसी अविश्वासी के साथ विवाह में बना रह सकता है, और यह पाप नहीं होगा (यद्यपि इससे उसका आत्मिक जीवन और कठिन हो जाएगा)। यह इस बात से प्रगट है कि नए नियम के खण्ड मसीहियों को बताते हैं कि यदि वे अविश्वासियों से विवाहित हैं तो क्या किया जाना चाहिए (1 कुरि. 7:12, 13; 1 पतरस 3:1-6)।

3. एक मसीही जिसका अविश्वासी से विवाह हो रखा है, उसे केवल इसी आधार पर तलाक देने का कोई अधिकार नहीं है। इसके विपरीत, पौलुस ने विशेष रीति से कहा कि एक मसीही को अपने अविश्वासी जीवन-साथी को त्याग नहीं देना चाहिए:

> यदि किसी भाई की पत्नी विश्वास न रखती हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो, तो वह उसे न छोड़े। और जिस स्त्री का पति विश्वास न रखता हो, और उसके साथ रहने से प्रसन्न हो; वह पति को न छोड़े (1 कुरि. 7:12, 13)।

4. एक मसीही जिसका गैर-मसीही के साथ विवाह हुआ है उसे अपने जीवन-साथी के साथ ऐसे रहने का प्रयास करना चाहिए जिससे वह मसीह की ओर आकर्षित हो सके। पतरस ने 1 पतरस 3:1-6 में यह कहा:

> हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के आधीन रहो। इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हो जो वचन को न मानते हों, तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चाल-चलन को देख कर बिना वचन के अपनी अपनी पत्नी के चाल-चलन के द्वारा खिंच जाएं। और तुम्हारा श्रृंगार, दिखावटी न हो, अर्थात बाल गूंथने, और सोने के गहने, या भांति भांति के कपड़े पहिनना। वरन तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है। पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियां भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से संवारती और अपने अपने पति के आधीन रहती थीं। जैसे सारा अब्राहम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी: सो तुम भी यदि भलाई करो, और किसी प्रकार के भय से भयभीत न हो तो उस की बेटियां ठहरोगी।

अनेकों विश्वासी मसीही पुरुष (मेरे पिता सहित) - कुछ वे भी जो कलीसिया के अगुवे हैं - इसलिए मसीही बने क्योंकि उन्होंने विश्वासी मसीही स्त्रियों से विवाह किए। परमेश्वर उन पत्नियों को आशीष दे जो पतरस के निर्देशों का पालन करती हैं, और अपने व्यवहार के द्वारा, अपने पतियों को प्रभु के लिए जीत लेती हैं।

उपसंहार। एज्रा की पुस्तक हमें सिखाती है कि मिश्रित-धर्म के विवाह, समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। मसीही इन समस्याओं से बचने के लिए निर्णय ले सकते हैं कि वे केवल उन्हीं से विवाह करेंगे जो मसीही होंगे।

क्या हमें औरों के बारे में बताना चाहिए? (9:1)

यहूदा के "हाकिमों" ने औरों के बारे में बताया; उन्होंने एज्रा से कहा कि यहूदा के अगुवों और और लोगों ने देश के अन्यजाति मूर्तिपूजकों से विवाह किए हैं। आज,

जिन्होंने पाप के बारे में बताया उन्हें “भेदिया” (जैसे बच्चों को कभी-कभी “चुगलखोर” कहा जाता है) कहा जा सकता है। आधुनिक संस्कृतियों में जो लोग अधिकारियों को अपने मित्रों या भाइयों द्वारा किए गए गलत कार्यों के बारे में “बताते” हैं उनकी सामान्यतः भर्त्सना की जाती है। एक मसीही को ऐसे कार्य के बारे में क्या सोचना चाहिए?

बाइबल में दूसरों के बारे में “बताने” की कहीं विशेष रीति से भर्त्सना नहीं की गई है। ऐसा करने की मनाही बाइबल के अनुसार कम और सामान्य व्यवहार के अनुसार अधिक है। किन्तु बाइबल में व्यर्थ बकवाद और इधर की उधर लगाने की भर्त्सना अवश्य की गई है। दूसरों की गलतियों की जानकारी को मनोरंजन या बुरे उद्देश्यों से दोहराने की भर्त्सना की गई है।

मसीही की सबसे उच्च निष्ठा प्रभु के प्रति होनी चाहिए, जिसमें सच्चाई के, तथा दूसरों की सहायता करने के प्रति समर्पित होना अनिवार्य है। इसलिए एक मसीही को किसी को बचाने का प्रयास नहीं करना चाहिए, यदि प्रभु की अथवा कानून की आज्ञाकारिता की माँग है कि उस व्यक्ति के पापमय या गैरकानूनी कार्यों के बारे में बताया जाए। लोगों को गलत करने में सक्षम करना उनकी कोई सहायता नहीं होती है; यह उनके लिए सहायक नहीं हानिकारक होता है। यदि कोई भाई किसी पाप में पड़ा हो, तो उसे अपने पाप के परिणामों का सामना करने के लिए बाध्य करना होगा। किसी के बारे में “बताना” भला है या बुरा, यह “बताने वाले” के उद्देश्य द्वारा निर्धारित होता है। यदि उसका उद्देश्य प्रभु को प्रसन्न करना, कानून का पालन करना, समाज को लाभ पहुँचाना, और गलती करने की वास्तव में सहायता करना है, तो उसे उचित अधिकारियों को गलती करने वाले के बारे में बताना चाहिए।

एज्रा 9 में बताने वाले एक उपयुक्त सुधार के सूत्रधार होने के द्वारा सहायता कर रहे थे। आज वे बताने वाले जिनके उद्देश्य धर्मी होते हैं, यही कर सकते हैं।

हमारी सार्वजनिक प्रार्थनाएं (9:6-15)

एज्रा 9:6-15 में एज्रा की सुन्दर प्रार्थना लिखी गई है जो उसने यहूदियों के देश के अन्यजाति-मूर्तिपूजकों से विवाह के बारे में जानकारी मिलने के बाद की थी। अनेकों प्रकार से, उसकी यह प्रार्थना आज सामाजिक प्रार्थना के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

प्रार्थना का विषय। जब हम प्रार्थना करें, तब हमें अपने आप को सम्मिलित करते हुए सभी पापों को स्वीकार करना चाहिए। हमें परमेश्वर का धन्यवादी होना चाहिए उस सब के लिए जो उसने हमारे लिए किया है, इस बोध के साथ कि हम उसकी किसी भी भलाई के योग्य नहीं हैं। हमें उसके अनुग्रह, उसकी भलाई, और उसकी धार्मिकता के लिए उसकी आराधना करनी चाहिए।

प्रार्थना का उद्देश्य। एज्रा ने केवल परमेश्वर का ही नहीं, वरन अन्य यहूदियों का भी ध्यान आकर्षित करने के लिए ही प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना लोगों को शिक्षा देने और उन तक पहुँचने का माध्यम थी, कि वे पश्चाताप करें। हम

सामान्यतः कहेंगे कि सार्वजनिक प्रार्थना को उसके श्रोताओं को शिक्षा देने के लिए नहीं प्रयोग करना चाहिए, क्योंकि प्रार्थना परमेश्वर को संबोधित होती है। किन्तु एज्रा की प्रार्थना सुझाव देती है कि सार्वजनिक प्रार्थना का दूसरों को बताने और प्रोत्साहित करने में योगदान हो सकता है।

सार्वजनिक प्रार्थना का प्रभाव। एज्रा के साथी यहूदी जानते थे कि उसकी प्रार्थना ऐसे व्यक्ति के द्वारा की जा रही है जो उस विषय के प्रति पूर्णतः समर्पित है जिसके लिए वह प्रार्थना कर रहा है। एक पाखंडी की प्रार्थना - वह चाहे कितनी भी वाक्पटुता के साथ क्यों न हो - कभी लोगों को सही करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करेगी, परन्तु "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है" (याकूब 5:16)।

समाप्ति नोट

[1]संपूर्ण एज्रा 9 "एज्रा के संस्मरण" का एक भाग है। [2]उदाहरण के लिए, लेस्ली सी. एलेन ने लिखा, "इस अन्तराल [पांचवें और नौवें महीनों के मध्य], हमारी अपेक्षा है कि एज्रा ने लोगों को [व्यवस्था] सिखाई होगी। हम यही बात नहेम्याह 8 में पढ़ते हैं, जिसकी तिथि सातवें महीन की है। यह बहुत संभव है कि यह अध्याय, अधिक सटीक रीति से नहेम्याह 7:73 से आरंभ कर के, मूल में एज्रा के संस्मरणों का भाग था - और संपादक ने किसी उचित कारण से उसे इस नए स्थान पर रख दिया।" (लेस्ली सी. एलेन एण्ड टिमोथी एस. लेनिअक, *एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर*, न्यू इंटरनैशनल बिबलिकल कॉमेंट्री [पीबौडी, मेसाच्युसेट्स: हेंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 2003], 71). साथ ही देखें चार्ल्स टी फ्रित्श्च, "द बुक ऑफ एज्रा," में *द इंटरप्रेटर्स वन वोल्यूम कॉमेंट्री*, एड. चार्ल्स एम. लेमन (नैशविल्ले: एबिंगडन प्रैस, 1971), 225. [3]सी. एफ. कीएल, *द बुक्स ऑफ एज्रा, नहेम्याह, एण्ड एस्तेर*, ट्रांस. सोफिया टेलर, बिबलिकल कॉमेंट्री ऑन ड ओल्ड टेस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, एन. डी.), 115. [4]एच. जी. एम. विलियम्सन, *एज्रा, नहेम्याह*, वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 16 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1985), 129. [5]"हाकिम" (שַׂר, *शार)* के लिए प्रयुक्त इब्रानी शब्द का अर्थ होता है "अधिकारी," "मुख्या," या "अगुवा," और इसका अनिवार्यतः अभिप्राय उसके राजसी वंश से होना नहीं होता है। [6]राल्फ डब्ल्यू. क्लीएन, "द बुक्स ऑफ एज्रा एण्ड नहेम्याह," द *न्यू इंटरप्रेटर्स बाइबल*, एड. लीएन्डर ई. केक (नैशविल्ले: ऐबिंगडन प्रैस, 1999), 3:735. किन्तु, एक अन्य व्याख्याकर्ता ने सुझाया है कि, इन आयतों में जिस "थोड़े दिन से" का उल्लेख आया है, साथ ही अन्य उल्लेखित आशीषों के वर्णन के लिए प्रयुक्त शब्द, "परमेश्वर की किसी कृपालु गतिविधि के स्थान पर समाज की तुच्छ स्थित पर अधिक बल देते हैं" (मार्क ए. थ्रौन्टविट, *एज्रा-नहेम्याह*, इंटरप्रेटेशन [लुइविल्ले: जौन नौक्स प्रैस, 1992], 53). "थोड़े दिन से" प्रदान की गई आशीषें संभव है कि, तथा, जोखिम में थीं कि, खो जाएं। [7]विलियमसन, 136. [8]थ्रौन्टविट, 54. [9]देखें उत्पत्ति 6:1-7 (जल-प्रलय से पूर्व); गिनती 25:1-5 (मूसा का समय); न्यायियों 2:10-16 (न्यायियों का समय); और 1 राजा. 11:1-13 और नहेम्य. 13:26 (सुलेमान का समय). [10]उदाहरण के लिए, देखें, निर्गमन 12:48. दोनों, पुराने और नए नियम में उल्लेखित यहूदी मत में परिवर्तित लोगों के विषय विचार करें।

[11]यद्यपि एज्रा 9:1 में "लोग" तथा "याजक और लेवीय," के बारे में कहा गया है, 9:2 कहता है कि, "हाकिम और सरदार इस विश्वासघात में मुख्य हुए हैं।"